चंचला

लेखिका - सुंदरी उतमचँदाणी

ट्रास्लेशन - गाइत्री

कॉलेज के टॉवर ने छह बजे का घंटा बजाया था, जब सरला और गुली ने आकर बलराम से टिकट मांगी। फुर्ती से टिकट फाड़ उन्हें पकड़ाते हुए बलराम ने कहा था, ‘‘जल्दी जाओ, जलसा शुरू हो चुका है।’’

सरला ने टिकट लेते हुए कहा, ‘‘जलसे तो रोज ही देखते रहते हैं। गुली को जरा अपना चेहरा तो देखने दो, बलराम—बलराम कहकर जान ही खा गई है।’’

गुली ने गुस्से से अपना निचला होठ काट जोर से सरला की पीठ पर मुक्का मारा।

सरला ने ‘हाय मां !’ कहते अपनी पीठ को सहला अपने घूटने की टक्कर से टिकट वाली मेज उल्ट दी। बलराम ने टिकट समेटने के लिए नीचे झुकते हुए कहा, ‘‘हमारे ऐसे भाग्य कहां कि कोई हमें याद करे।’’

गुली, सखी की शरारत समझ चुकी थी। उसे बलराम पर दया आ गई। वह भी नीचे बैठकर उसे टिकट समेटने में मदद करने लगी और हंस कर बोली, ‘‘क्या तुझे इतना भी विश्वास नहीं है कि कोई तुझे भी याद करता होगा... ?’’

बलराम को लगा जैसे टिकट समेटते—समेटते ही कोई हीरा हाथ लग गया हो। वह चुपचाप गुली के चेहरे को देखने लगा। उसके होंठों पर एक रस भरी मुस्कान, जो किसी कुंआरी कन्या को देख कर एक मर्द के होठों पर आ जाती है झलक उठी। आभार भरी निगाहें उठाकर बोला, ‘‘यदि सचमुच कोई मुझे याद करता है तो मैं अपने बड़े भाग्य समझूंगा।’’

सरला जो अभी भी अपनी पीठ को सहला रही थी उनको खुसपुस करता देख चिल्लाकर बोली, ‘‘ऐ! देखते नहीं हो, यहां मैं भी खड़ी हूं। टिकट समेट रहे हो या आपस में खुसपुस कर रहे हो ?’’

गुली और बलराम खड़े होकर हंसने लगे। उसी समय दो लड़के टिकट लेने के लिए आ पहुंचे।

‘‘अब चलो भी।’’ कहते हुए सरला ने गुली को बांह से पकड़कर खींचा। पीछे से सुनाई दिया था लड़के बलराम से कह रहे थे, ‘‘भाई वहां क्या देख रहे हो ? वह तो उड़ गई, नार्थ पोल और साउथ पोल। ये तुझारे जाल में फंसने वाली नहीं।’’

गुली ने हॉल में घुसते हुए कहा, ''यह तुमने ठीक नहीं किया। बलराम जैसे सीधे—सादे लड़के के साथ शरारत नहीं करनी चाहिए थी।''

''हाय रे हाय! कितनी हमदर्दी है बलराम के लिए। सुना है हमदर्दी तो प्रेम की सगी बहन लगती है, कहीं सुजान को न तुमसे हाथ मलने पड़ जाए।''

गुली ने जोर से सरला की पीठ पर चिकोटी काटी। सरला बदला लेने का मौका ढूंढ ही रही थी कि सुजान ने आकर उनसे टिकट ली और उन्हें सही जगह पर बिठाया। सीट पर बैठते ही सरला बोली, ''गुली की बच्ची! अब देखना, यह जलसा देखना हराम कर दूंगी। इतनी जोर से चिकोटी काटी है...।''

सुजान जाते-जाते वापस लौट आया। आहिस्ता मगर रौब से बोला, ''यह क्लास रूम नहीं है। मेहरबानी करके औरों के आगे कॉलेज की इज्जत खराब मत करो।''

सरला ने क्षण भर के लिए उसे घूर कर देखा । अन्धेरे के कारण सुजान उसके मुड़े हुए कन्धे ही देख पाया। उसे पीछे से सुनाई दिया, ''मुंह का ट्राइंगल तो देखो। यह क्लास रूम नहीं है...हूं..।''और फिर किसी अपरिचित की हंसी। सुजान अपने तिकोने चेहरे पर हाथ घुमाकर नाक सिकोड़ता ग्रीन रूम की और बढ़ गया।

जलसा शुरू हो चुका था। सरला आस-पास बैठे लोगों को देखने लगी। किसी लड़की के ब्लाउज का गला पीछे से काफी बड़ा था जिसे देखकर सरला बोली, ''शायद ब्लाउज का आगे वाला हिस्सा पीछे की ओर पहन कर आई है।'' कोई टाईट कुर्ते के कारण टांगे जोडे बैठी थी जिसे देखकर बोली, ''देखो स्टेचू!''

गुली ने खीजते हुए कहा, ''या खुदा! यदि तुम मुझसे पहले मरोगी तो यकीनन पोस्ट मार्टम करवा कर देखूंगी कि तुझ्हारे अन्दर कौनसी मशीन फिट है, जो हर वक्त चलती ही रहती है... ?''

''अब तुम जब तक रो न दोगी तब तक के लिए बिल्कुल चुप।'' कहकर सरला ने होठों पर अंगुली रख दी। पीछे से भी किसी ने 'श..श....' बोल कर चुप रहने के लिए कहा था।

जलसा समाप्त होने पर उबासी लेती सरला खड़ी हो गई। गुली ने पूछा, ''मजा आया ?''

मूंह टेढ़ा कर सरला बोली, ''बहुत बोर कर दिया तुझ्हारे सुजान ने।''

''पागल, मुझे तो प्रोग्राम बहुत अच्छा लगा।''

''था क्या इसमें ? सिन्धी, सिन्धी! उफ बोरियत! सिन्धी और कलाकार ?''

''औरों की कही मत कहो।''

''*आज़्र्स एण्ड मीन* में रानी का दासी से मोह, उसे कहां से कहां पहुंचा देता है।''

''सिर्फ अंग्रेजी नाटकों के उदाहरण नहीं देने चाहिए सिर के दर्द। देखा नहीं ड्रामा इतना अच्छा था कि सारा हॉल जैसे उसके जादुई असर में था।''

''बस, बस! अब आगे भी बढ़ो। सुजान का प्रोग्राम हो और तुम तारीफ न करो?''

''लोग भी तो आगे बढ़े न। मुझे तो यही खुशी है कि आज हूटिंग नहीं हुई। बेचारे कलाकार इज्जत के साथ अभिनय तो कर पाए...।''

कानों पर हाथ रख कर सरला बोली, ''हाय, हाय! सुजान की तारीफ का मौका हाथ से क्यों जाने दोगी?''

दोनों अभी दरवाजे से बाहर ही निकल रही थीं कि अचानक सरला को धक्का लगा। वह गिरते—गिरते बच गई लेकिन पैर मुड़ गया। सरला जैसे—तैसे हॉल से बाहर निकलकर कॉलेज के लॉन में आ बैठी और पैर को सहलाने लगी। गुली उसके पास खड़ी थी। उसका ध्यान सरला के कानों में पड़े हीरे के बुन्दों और गले के चमकते नैकलेस पर चला गया। हमदर्दी से बोली, ''दर्द ज्यादा हो रहा है क्या? पूरी पीली पड़ गई हो।''

''हट पागल!'' सरला ने आंसू भरी आंखों से हंसकर कहा, ''ज़्लोरोसेंट लाईट जल रही है न, इससे हर चीज पीली नजर आती है।'' और उठकर लंगड़ाते हुए चल पड़ी। दूसरी बेंच तक पहुंचते पहुंचते उसकी चीख निकल गई। वह बैंच पर बैठ दर्द से कराहती हुई बोली, ''पता नहीं किसने दरवाजे से निकलते समय टांग अड़ा दी थी।''

गुली, सखी के दुख से परेशान होकर इधर-उधर देखने लगी। इतने में सुजान आ गया उसने पूछा, ''खैरियत तो है?''

''टैक्सी ले आओ न सरला का पैर मुड़ गया है।''

सुजान टैक्सी ले आया। दोनों सहेलियों को टैक्सी में बिठा, दरवाजे पर रखे गुली के हाथ को दबाते हुए धीरे से बोला, ''सहेली को समझा देना इतनी शरारत अच्छी नहीं होती। किसी दिन कोई मेरे जैसा मिल गया तो मुंह की खानी पड़ेगी।''

गुली समझ गई कि दरवाजे से निकलते समय टांग किसने अड़ाई थी।

परीक्षाएं करीब थी। कॉलेज के गेट पर खड़ी सरला बलराम से पूछ रही थी, ''बी.ए के पेपर होंगे? कम से कम दो -तीन वर्ष के होने चाहिए।''

''भाई, मैं तो केवल एक बार ही फेल हुआ हूं इसलिए मेरे पास तो एक ही वर्ष के पेपर हैं।''

''अरे, मैने तो सोचा था तुम दो चार चढ़ाईयां चढ़ चुके हो। खैर! मैं तो किताब पढ़कर कभी भी खुद को बोर नहीं करती। बस दो चार वर्षों के पेपर देखकर प्रश्न तैयार कर लेती हूं और मजे से अच्छे अंक आ जाते हैं।''

अचानक सरला की पीठ पर मुक्का लगा तो वह चौंक गई। गुली किस वक्त आकर उसके पीछे खड़ी हो गई थी उसे पता ही नहीं चल पाया था।

गुली ने कहा, ''तुज्हारे पास छ:वर्ष के पेपर तो पहले से ही पड़े हैं।''

हल्की मुस्कान की रेखा उसके होठों तक आकर गुम हो गई। मासूम सा चेहरा बनाकर कहने लगी, ''वह सब तो गुम हो गए। और बेशर्म, तुम यह क्या कह रही हो? मैं क्या छ: साल तक बी.ए में फेल होती रही हूं? जो उतने पेपर... ?''

और ज्यादा सुनने के लिए बलराम नहीं रूका।

सरला नाक चढ़ाकर बोली, ''मनहूस कहीं की, मसखरी का मजा ही गंवा दिया।''

''तुज्हारा क्या है? बस, मिल जाए कोई शिकार। बेचारे गरीब के दिल पर क्या बीती होगी?''

''तुझे किस देव ने पकड़ रखा है, बता न ?'' कहते हुए गुली को बांह से खींचकर सरला ने घास पर बिठा दिया।

''तुज्हारी जलसे वाली शरारत के बाद बलराम हमारे घर आया था।''

''अच्छा! हद कर दी जनाब ने। लड़की तुमने तो मुझे बताया ही नहीं।''

''पहले बात तो सुनो। हमारे घर के लोग क्योंकि खुशमिजाज हैं इसलिए यह साहब हर दुसर-तीसरे दिन घर आने लगे। दादा ने अपने साथ भोजन खिला कर इनकी झिझक मिटा दी थी। एक दिन कहने लगा, 'आपके घर में इतनी रौनक है कि अपने घर जाने का मन ही नहीं करता।' मां से बातें करता, बच्चों को पढ़ाता, मुझे भी जिस चीज की जरूरत पड़ती वह बोलने से पहले हाजिर कर देता। बेचारे को विश्वास हो गया था कि मैं उसे बहुत चाहती हूं।''

सरला पेट पर हाथ रखकर हंसती चली गई।

''लेकिन पड़ौस में चर्चा होने लगी है कि बलराम गुली के घर रोज आता है।''

''तो क्या हुआ? कौनसा इन्कलाब आ गया? तुम लंगड़ी होती तो लोग कहते लंगड़ी है। कोई घर में आएगा तो लोग कहेंगे ही न कि फलां साहब गुली के घर रोज आते हैं...यह कोई बुरी बात तो है नहीं।'' हंसी सरला की छाती से मानो झरने के समान बहती चली जा रही थी।

''अब बात पूरी होने दोगी कि हंसती ही रहोगी? '' गुली ने सरला की चोटी खींचते हुए कहा।

''बस, बस तौबा की मैने।'' चोटी छुड़ाकर गहरी सांस छोड़ सरला ने गुल्ली के घुटने पर हाथ मारते हुए कहा, ''अब तो लाओ न, रेल को पटरी पर...।''

गुली को घुटने पर शायद जोर से हाथ लगी थी बोली, ''अब नहीं लानी, रेल पटरी पर। पहले क्लास में चलो। सिन्धी का पीरियड शुरू हो गया होगा।''

''तुम बोर किए बिना न मानोगी...।''

दोनों उठकर क्लास में चली गई। सामी के श्लोकों पर टीका-टिप्पणी चल रही थी। सरला ने बलराम को गुली की तरफ निहारते देखा तो धीरे से बुदबुदाई, ''इस क्लास में दो साल के अनुभवी ही 'घर में घर की तरह घुसना' जानते हैं।''

पीरियड समाप्त होते ही सरला, गुली की कमर में चिकोटी काट उसे दूर घसीट कर ले गई। दालान में पार्टिशन रखा था। उसके दूसरी तरफ पहुंचकर कहने लगी, ''अब बको न, सुनू तो क्या बकती हो?''

गुली ने होठों में हंसी दबाते हुए बाल्कनी के नीचे फैली हरी घास पर खिले पीले फूलो पर अपनी नजरें जमा दी।

सरला ने आंखें हदखाते हुए कहा, ''ऐसे सताओगी तो मैं नाराज हो जाऊंगी।''

गुली ने दबी सी हंसी में हंसकर पूछा, ''पहले तुम बताओ उस बाल गोपाल के पीछे हाथ धोकर क्यों पड़ गई हो?''

''अच्छा, तो आग दोनों तरफ लग गई है।''

''हट पागल!'' गुली ने सिर झटकते चोटी आगे कर ली।

''हाए! नखरा तो देखो। बलराम क्लास में सारा समय तुझ्हें ही ताक रहा था।''

''क्यों? तुझ्हें जलन हो रही थी क्या? ''

''मर जा री। जले मेरी जूती। पहले तुम अपनी रामायण तो खत्म करो...।''

''फिर छेड़ोगी तो नहीं ?''

''गुरू कसम।'' सरला ने अपने कानों को छूकर कहा।

''सुन!'' गुली ने आंखे मटकाते हुए बताया, ''दो—चार दिन पहले बोला था चलो एलीफेण्टा चलें। मैने कहा, नहीं बाबा। लोग जाने क्या —क्या बोलेंगे। तो कहने लगा, लोगों को तो दिखाना ही चाहिए।''

''अच्च्छा! इस बाल गोपाल की ऐसी हिज़्मत। हाए,हाए! बेचारा सुजान।'' कहकर सरला अपने सिर पर हाथ मारकर इस अन्दाज से खड़ी हो गई जैसे वास्तव में सुजान की दौलत लुटते देख ली हो। अचानक बोली, ''सच गुली, चली जाती न घूमने।''

''क्या फायदा ?''

''मजा आता।''

''मर जा री, तुने ही ऐसे मजे लेकर अपने दोस्तों को नाराज कर रखा है।''

''छी:, मुझे किसी के नाराज होने की परवाह है क्या ? हम तो अकेले आए हैं अकेले ही जाएंगे।''

''किसी के साथ घूमने में बुराई क्या है... ?''

''अच्छा छोड़ो अपनी बात। इस बाल गोपाल के विचार सुनो।''

जाकर मां से परमीशन लेता हुआ बोला कि मैं दुनियां के आगे नए आदर्श रखना चाहता हूं। लड़के लड़कियां साथ-साथ घूमें फिरें, इसमें बुराई तो नहीं हैं। मां ने कहा, 'बस! लड़के—लड़कियां फालतू घूमें- फिरें तो कोई बुराई नहीं है और मिलकर कोई देश सुधार का या दूसरा अच्छा काम करें तो बुराई है।' सरला, बस उस समय तुम उसका चेहरा देखती...।''

सरला के माथे की लकीरे गहरी हो गई। गुली अपनी ही धुन में बोलती जा रही थी, ''जैसे बासी बैंगन।'' और पेट पर हाथ रख जोर जोर से हंसने लगी।

परन्तु वह हंसमुख चंचला हंस नहीं पाई। कोई बारीक सी चुभने वाली चीज उसके दिल में कहीं गड़ सी गई थी।